दादी, दिल कहे तेरा शुक्रिया

दुनिया में कितने ही लोग आए और चले गये लेकिन कुछ व्यक्ति अपनी अमिट छाप छोड़कर जाते हैं। ऐसी विभूतियों को उनके जाने के बाद भी याद करते रहते हैं। उनके धवल जीवन से प्रेरणा लेते रहते हैं और ऐसी विशेष आत्माओं को अपना आदर्श मानकर चलते हैं।

यथा नाम तथा कर्म को चरितार्थ करने वाली दादी प्रकाशमणि भी ऐसी ही दिव्य प्रकाश का पुंज थी। दादी की अलौकिकता और आध्यात्मिकता का आभामंडल इतना विशाल था कि समस्त भूमंडल की आत्माओं ने उनसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में कुछ न कुछ प्राप्त किया। दादी जहाँ-जहाँ भी गईं, अपने अलौकिक आकर्षण की अमिट छाप छोड़कर आईं। दादी प्रकाशमणि जी से मिलने जो आबू पर्वत पहुँचे, वे भी कृतार्थ हुए बिना नहीं रह सके। छोटे, बड़े, स्त्री, पुरुष, युवा, वृद्ध, गोरे, काले, देशी-विदेशी जो भी दादी के संपर्क में एक बार आये, सदा के लिए उनके ही बनकर रह गये।

मुझे विगत 23 वर्षों से अनेकानेक बार दादी जी से सामने-सामने मिलने, उनसे प्यार भरी दृष्टि लेने, उनकी क्लासेज़ को सुनने और उनके जीवन के विविध आयामों से रूबरू होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं जितनी भी बार दादी जी से मिला, उनके जीवन के उतने ही रंग देखने को मिले। दादी विद्वानों के साथ विदुषी के रूप में मिलती थी। युवाओं के साथ एक नौजवान जैसे जोशो-खरोश से मुलाकात करती थी। वैज्ञानिकों से बातचीत करते समय दादी एक वैज्ञानिक का रूप धारण कर लेती थी। सचमुच ऐसा बहुरंगी व्यक्तित्व देखने में बहुत ही कम आता है। मैं दादी जी के विषय में अपने कुछेक संस्मरण, जिन्होंने मुझे अंदर तक झकझोर दिया और एक नया जीवन जीने की प्रेरणा दी है, ज्ञानामृत के सुधी पाठकों के समक्ष रखना चाहूँगा –

प्यार की प्रतिमूर्ति – समर्पित भाइयों की भट्ठी में एक बार मेरा पांडव भवन (मधुबन) जाना हुआ। भट्ठी के बीच में ही अचानक मेरी तबीयत काफी खराब हो गई फलस्वरूप, तत्काल मुझे ग्लोबल अस्पताल में भर्ती कराया गया। ग्लूकोज चढ़ाया गया, दवाइयाँ आदि दी गईं तथा मैं अर्द्ध बेहोशी की हालत में था। दूसरे दिन प्रात: मैंने जैसे ही आँखें खोलीं तो देखा कि स्वयं दादी प्रकाशमणि जी मेरे बिस्तर के पास खड़ी हैं और मुझे पूछ रही हैं कि मेरे मीठे भाई, कैसे हो, क्या हुआ है तुम्हें? इतना सब देखकर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ, मेरे रोम-रोम पुलकित हो गये और मैंने एकदम बिस्तर से खड़े होकर दादी जी को कहा कि मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ, पता नहीं मुझे क्यों यहाँ हॉस्पिटल में ले आये हैं। इसके बाद दादी ने मुझे बहुत शक्तिशाली दृष्टि दी और बड़े प्यार से टोली खिलाई। दृष्टि लेते समय मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि कोई मेरे बुखार को अंदर से हल्का कर रहा है, उसी दिन दोपहर को मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गई।

कहने का भाव है कि इतने बड़े संस्थान की मुखिया होते हुए भी दादी जी एक-एक भाई-बहन का ख्याल रखती थीं। वे प्यार और अपनेपन से सबकी पालना करती थीं। मेरा दिल तो यही कहता है, दादी तेरा शुक्रिया।

निमित्त और निर्माणचित्त – एक बार मेरा केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव भ्राता प्रसन्न होता को डॉक्टर्स की कॉंफ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में लेकर जाना हुआ। दादी से मिलते समय, होता जी ने प्रश्न पूछा कि दादी जी, आप इतने बड़े संस्थान को इतने सुचारु रूप से कैसे चलाते हैं? दादी ने उत्तर दिया कि **मैं**

नहीं चलाती, चलाने वाला तो शिव बाबा है। मैं स्वयं को निमित्त समझती हूँ, बाकी बाबा ने मुझे इतने सारे सहयोगी दिये हैं, मैं सबके साथ मिलकर, सहयोग से, अपनेपन से चलती हूँ। मैं सबको अपना समझती हूँ और सभी मुझ पर विश्वास करके चलते हैं, यही राज़ है इस संस्थान की सफलता का। होता जी ने दादी की इस बात को अपने लिए वरदान रूप में लिया और वे स्वास्थ्य मंत्रालय के कई प्रोजेक्ट, जो अधूरे थे उनको उक्त शक्तियों के आधार पर पूरा कर पाए। मैं जब-जब होता जी से मिलता हूँ तो वे दादी के प्रति अपना आभार प्रकट किए बिना नहीं रहते हैं।

लव और लॉ का बैलेंस रखने वाली – दादी एक तरफ जहाँ स्नेह स्वरूपा थीं, वहीं दूसरी ओर कायदे-कानून के विषय में बहुत सख्त भी थीं। कुमार भाइयों की भट्ठी में प्रश्नोत्तर के समय एक बार मैंने दादी से पूछा कि कई बार रात को जाने-अनजाने देर से सोने से अमृतवेला मिस होता है। तो दादी ने तुरंत उत्तर दिया कि सवेरे का योग तो ब्राह्मण जीवन की नींव है। यदि अमृतवेले योग नहीं करेंगे तो शक्ति कहाँ से मिलेगी। हालात चाहे कैसे भी हों, हमें अपना योग कभी भी मिस नहीं करना है। बाबा इस भूल के लिए कभी माफ नहीं करेगा। मैंने उसी दिन से यह नियम बनाया कि चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन प्रात:काल का योग मुझे जरूर करना है। आज मैं देखता हूँ कि अमृतवेले योग में बाबा मुझे कितने अच्छे अनुभव कराते हैं और मैं इस मार्ग में आगे बढ़ता ही जाता हूँ। मुझे अमृतवेले के लिए ऐसी श्रेष्ठ प्रेरणा देने के लिए मैं दादी का दिल से शुक्रगुज़ार हूँ।

हाजिर जवाब – वैज्ञानिक और अभियंताओं के सम्मेलन में, सैंट्रल इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (सी.ई.एल.) के तत्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ.ए.जी. अग्रवाल को लेकर मैं आबू गया। दादी से व्यक्तिगत मुलाकात के समय डॉ. अग्रवाल ने प्रश्न पूछा कि राजयोग व्यक्ति के जीवन को बदल देता है, क्या इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण है। दादी जी ने तुरंत उत्तर दिया कि आप मेरा और हज़ारों-लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का जीवन देख सकते हैं। राजयोगियों के जीवन में सकारात्मकता, आंतरिक शुद्धि और सहयोग जैसे गुण आ जाते हैं। हरेक घटना के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक हो जाता है और वे सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते जाते हैं। ऐसा सटीक जवाब सुनकर अग्रवाल जी दंग रह गये, फलत: आज तक उनकी राजयोग के प्रति, रुचि बनी हुई है। जब-जब हमारी बातचीत होती है, डॉ. अग्रवाल दादी का धन्यवाद करना नहीं भूलते हैं।

मन के संकल्पों को जानने वाली – रक्षाबंधन का पर्व था, दादी जी सबको राखी बाँध रही थीं। मेरी बारी आने वाली थी तो मैंने मन-ही-मन सोचा कि मुझ में अनिर्णय (करूँ या न करूँ) की बात कभी-कभी आ जाती है, आज मैं इस कमी को खत्म करने का संकल्प करूँगा। जब दादी ने मेरी कलाई पर राखी बाँधी तो बहुत शक्तिशाली दृष्टि दी तथा इसके बाद मेरे साथ हाथ मिलाया। मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि दादी मुझे अनिर्णय की कमी को खत्म करने के लिए पावरफुल करंट दे रही हैं। वह दिन था और आज का दिन है, मैं जब भी कोई काम करता हूँ, एक बार सोच-विचार कर निर्णय ले लेता हूँ और फिर पीछे नहीं हटता। मुझे इस शक्ति से अनगिनत लाभ हुए हैं और मैं दादी जी का आभारी हूँ कि उन्होंने कुछ सेकंड की शक्ति के द्वारा ही मेरी इतनी बड़ी कमज़ोरी को दूर कर दिया।

दादी हमारे दिल की धड़कन थीं – हम कुमारों की दादी थीं कुमारिका। भले ही दादी सशरीर हमारे साथ आज न भी हों लेकिन उनकी प्यार भरी दृष्टि, उनकी भोली चितवन, उनका मुस्कराता चेहरा, उनके रूहानी बोल, उनकी फरिश्तों जैसी चाल हमें आजीवन अभिप्रेरित और अनुप्राणित करती रहेगी। अंत में दिल यही गाता है, मुझे नया जीवन देने वाली दादी, तेरा दिल से शुक्रिया।

❑❑